Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

बहुविकल्पी प्रश्न

1. आज की जैव - विविधता कितने वर्षों के विकास का परिणाम हैं?

(अ) 2.5 से 3.5 अरब वर्षों
(ब) 3 से 4.5 अरब वर्षों
(स) 4 से 5 अरब वर्षों
(द) 4 से 4.5 अरब वर्षों

2. डाइवर्सिटी का अर्थ है–

(अ) जैविक
(ब) समूलता
(स) विविधता
(द) आनुवांशिक

3. पृथ्वी पर किसी प्रजाति की औसत आयु लगभग होती है–

(अ) 10 से 40 लाख वर्ष
(ब) 5 से 10 लाख वर्ष
(स) 1 से 2 लाख वर्ष
(द) 6 से 7 लाख वर्ष

4. प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण संरक्षण की अंतराष्ट्रीय संस्था का क्या नाम है?

(अ) ICUN
ब) INUC
(स) IUCN
(द) INCU

5. किसी निश्चित भौगोलिकक्षेत्र में पाए जाने वाले जीवों की संख्या और उनकी विविधता को कहते हैं–

(अ) जैव - विविधता
(ब) प्रजाति
(स) बायोम
(द) पारिस्थितिकी

6. जैव विविधता का संरक्षण निम्न में किसके लिए महत्त्वपूर्ण है–

(अ) पौधे
(ब) पौधे और प्राणी
(स) सभी जीवधारी
(द) जंतु

7. जो जैव विविधताएँ आकृतिक, शरीर क्रियात्मक तथा आनुवांशिक लक्षणों द्वारा प्रतिबिंबित होती हैं, क्या कहलाती है?

(अ) आनुवांशिक जैव विविधता
(ब) प्रजातीय जैव विविधता
(स) उपर्युक्त सभी
(द) पारितंत्रीय जैव विविधता

8. नेशनल पार्क (National parks) और पशुविहार (Sanctuaries) निम्न में से किस उद्देश्य के लिए बनाए गए हैं:

(अ) पालतू जीवों के लिए
(ब) संरक्षण के लिए
(स) शिकार के लिए
(द) मनोरंजन

9. किस प्रदेश में जैव विविधता न्यूनतम हैं–

(अ) उच्च भूमि
(ब) तटीय प्रदेश
(स) मरुस्थलीय प्रदेश
(द) ध्रुवीय प्रदेश

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

10. भारत सरकार ने प्राकृतिक सीमाओं के भीतर विभिन्न प्रकार की प्रजातियों को बचाने, संरक्षित करने और विस्तृत करने के लिए 1972 में कौन-सा अधिनियम पारित किया था?

(अ) वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम
(ब) वन जीव बोर्ड
(स) भौतिक पर्यावरण अधिनियम
(द) वन अभ्यारण्य अधिनियम

रिक्त स्थान :

11. प्रजातियों के दृष्टिकोण से और अकेले जीवधारी के दृष्टिकोण से जैव-विविधता ..... विकास का तंत्र है।

12. लगभग ..... प्रतिशत प्रजातियाँ, जो पृथ्वी पर कभी रहती थी, आज लुप्त हो चुकी है।

सत्य / असत्य

13. विश्व में महाविविधता केन्द्र देशों की संख्या 12 है।

14. सन् 1992 में ब्राजील में पृथ्वी सम्मेलन हुआ।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

15. सुभेद्य प्रजातियाँ किसे कहते हैं?

16. पारितंत्रीय जैव विविधता क्या है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

17. जैव विविधता के विभिन्न स्तर क्या हैं?

18. जैव विविधता का आर्थिक महत्त्व के बारे में व्याख्या करें।

निबंधात्मक प्रश्न

19. प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण संरक्षण की अंतर्राष्ट्रीय संस्था ने संकटापन्न पौधों व जीवों की प्रजातियों को उनके संरक्षण के उद्देश्य से कितने वर्गों में विभाजित किया है?

20. विश्व के रेखा-मानचित्र पर दस पारिस्थितक हॉट स्पॉट (महा जैव विविधता केंद्र) दर्शाएँ।

HOTS

21. मानव जाति के लिए जंतुओं के महत्त्व का वर्णन संक्षेप में करें।

मिशन ज्ञान
पढ़ें जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
100% FREE!
Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES
Download Mission Gyan App

Under CSR Support by ipca | Foundation
missiongyan
JINENDER SONI
Founder, MISSION GYAN

1. (अ) आज की जैव विविधता 2.5 से 3.5 अरब वर्षों के विकास का परिणाम है।
2. (स) डाइवर्सिटी का अर्थ है- विविधता; विभिन्नता; परिवर्तन; बहुरूपता; विचित्रता; उलट-पलट; भिन्नता; अनेकरूपता; वैविध्य; विभेद।
3. (अ) पृथ्वी पर किसी प्रजाति की औसत आयु 10 से 40 लाख वर्ष होने का अनुमान है।
4. (स) प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण संरक्षण की अंतराष्ट्रीय संस्था का नाम IUCN है।
5. (अ) किसी निश्चित भौगोलिकक्षेत्र में पाए जाने वाले जीवों की संख्या और उनकी विविधता को जैव विविधता कहते हैं।
6. (स) सभी जीवधारी
7. (अ) आनुवांशिक जैव विविधताएँ आकृतिक, शरीर क्रियात्मक तथा आनुवांशिक लक्षणों द्वारा प्रतिबिंबित होती हैं
8. (ब) संरक्षण के लिए
9. (द) जैसे-जैसेa भूमध्य रेखा से ध्रुवों की ओर जाते हैं जैव विविधता में कमी आती जाती हैं और ध्रुवों पर यह न्यूनतम हो जाती है।
10. (अ) **भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972:** भारत सरकार ने सन् 1972 ई. में इस उद्देश्य से पारित किया था कि वन्यजीवों के अवैध शिकार तथा उसके हाड़-माँस और खाल के व्यापार पर रोक लगाई जा सके। इसे सन् 2003 ई० में संशोधित किया गया है।
11. **रिक्त स्थान :** सतत्
12. **रिक्त स्थान :** 99
13. **सत्य / असत्य :** सत्य
14. **सत्य / असत्य :** सत्य
15. सुभेद्य प्रजातियाँ: यदि किसी प्रजाति की जनसंख्या इतनी कम हो गई हो कि उसके लुप्त होने की प्रबल संभावना हो तो उसे सुभेद्य प्रजातियाँ कहते है।
16. प्रजातीय बहुलता पारितंत्रीय एवं आनुवांशिक विविधता को जैव-विविधता किसी निश्चित परिवेश में पाए जाने वाले समस्त की संज्ञा दी गई है। पारितंत्रीय जैव विविधता जो विभिन्न जैव भौगोलिक क्षेत्रों, जैसे- झील, मरुस्थल, तटीय क्षेत्र, ज्वारनदमुख आदि द्वारा प्रतिबिंबित होती है।
17. जैव विविधता को तीन स्तरों में विभक्त किया जा सकता है–

प्रजातीय जैव विविधता	प्रजातीय जैव विविधता जो आकृतिक, शरीर क्रियात्मक तथा आनुवांशिक लक्षणों द्वारा प्रतिबिंबित होती है।
आनुवांशिक जैव विविधता	आनुवांशिक जैव विविधता जो प्रजाति के भीतर आनुवांशिक या अन्य परिवर्तनों से युक्त होती है।
परितंत्रीय जैव विविधता	परितंत्रीय जैव विविधता जो विभिन्न जैव भौगोलिक क्षेत्रों, जैसे-तटीय क्षेत्र, ज्वारनदमुख, झील, मरुस्थल आदि द्वारा प्रतिबिंबित होती है।

18. जीवन की विविधता पृथ्वी पर मानव के अस्तित्व और स्थाईत्व को मजबूती प्रदान करती हैं। समृद्ध जैव विविधता अच्छा स्वस्थ्य, खाद्य सुरक्षा, आर्थिक विकास, आजीविका सुरक्षा और जलवायु की परिस्थितियों को सामान्य बनाए रखने का आधार हैं। सभी मनुष्यों के लिए दैनिक जीवन में जैव विविधता एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है। जैव विविधता का एक महत्त्वपूर्ण भाग 'फसलों की विविधता' है, जिसे कृषि जैव विविधता भी कहा जाता है। जैव विविधता को संसाधनों के उन भंडारों के रूप में भी समझा जा सकता है, जिनकी उपयोगिता भोज्य पदार्थ, औषधि और सौंदर्य प्रसाधन आदि बनाने में है। जैव संसाधनों की ये परिकल्पना जैव विविधता के विनाश के लिए भी उत्तरदायी है। खाद्य फसलें, पशु, मत्स्य, वन संसाधन और दवा संसाधन आदि कुछ ऐसे प्रमुख आर्थिक महत्त्व के उत्पाद हैं, जो मानव को जैव-विविधता के फलस्वरूप उपलब्ध होते हैं।

विज्ञान पढ़ें: जब चाहें, जहाँ 100% FREE! Video COURSES | QUIZ | PDF | TEST SERIES Download Mission Gyan App

19. प्राकृतिक संसाधनों व पर्यावरण संरक्षण की अंतर्राष्ट्रीय संस्था ने संकटापन्न पौधों व जीवों की प्रजातियों को उनके संरक्षण के उद्देश्य से तीन वर्गों में विभाजित किया है-

i. **संकटापन्न प्रजातियाँ-** इसमें वे सभी प्रजातियाँ सम्मिलित है, जिनके लुप्त हो जाने का खतरा है। संकटापन्न प्रजातियों की IUCN लाल सूची में जोखिम की एक विशिष्ट श्रेणी के तौर पर लुप्तप्राय प्रजातियां शब्द का प्रयोग किया जाता है। IUCN वर्ग और मानदंडों के अधीन लुप्तप्राय प्रजाति, गंभीर रूप से संकटग्रस्त और असुरक्षित के बीच में है।

ii. **सुभेद्य प्रजातियाँ-** यदि किसी प्रजाति की जनसंख्या इतनी कम हो गई हो कि उसके लुप्त होने की प्रबल संभावना हो तो उसे सुभेद्य प्रजाति कहते है।

iii. **दुर्लभ प्रजातियाँ-** संसार में इन प्रजातियों की संख्या बहुत कम है। ये प्रजातियाँ कुछ ही स्थानों पर सीमित हैं या बड़े क्षेत्र में विरल रूप में बिखरी हुई है।

21. मानव जाति के विकास में जैव विविधता ने बहुत बड़ा योगदान दिया है। जंतुओं के द्वारा ही पर्यावरण को संतुलित बनाय रखने में सहायता प्राप्त होती है। इस प्रकार जंतु मानव जाति के लिए काफी महत्व हैं, जैसे-पेड़-पौधों से कई तरह की लकड़ियाँ, उद्योगों के लिए कच्चा माल और पर्यावरण के संतुलन में भी सहयोग मिलता है इसके साथ ही पेड़-पौधे भूमि के अपरदन को रोकते हैं।

एक जंतु दूसरे जंतु के आहार के रूप में काम आता है। जैव विविधता सभी मनुष्यों के लिए दैनिक जीवन में एक महत्त्वपूर्ण संसाधन है। जैव विविधता का एक आवश्यक भाग फसलों की विविधता है। जैव विभिन्नता को संसाधनों के उन भंडारों के रूप में भी समझा जा सकता है, जिनकी उपयोगिता भोज्य पदार्थ, औषधि और सौंदर्य प्रसाधन आदि बनाने में है। खाद्य फसलें, पशु, मत्स्य, वन संसाधन और दवा संसाधन आदि कुछ ऐसे प्रमुख आर्थिक महत्त्व के उत्पाद हैं जो मानव को जैव विविधता के फलस्वरूप उपलब्ध होते हैं।

मिशन ज्ञान
पढ़ें: जब चाहें, जहाँ चाहें, जैसे चाहें!
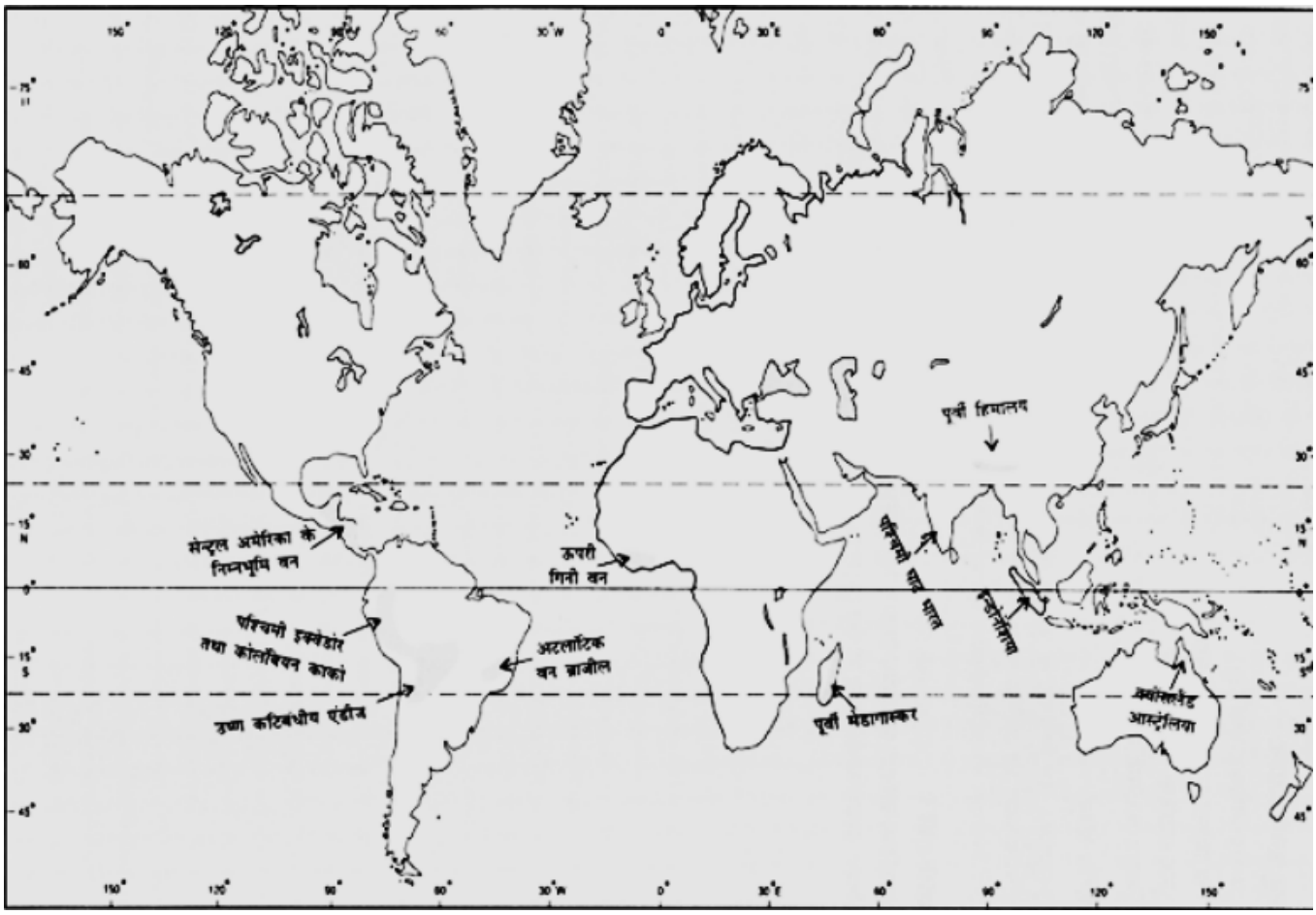
20.